गांधी का उत्तराधिकारी

दादा धर्माधिकारी

गांधी का उत्तराधिकारी
जवाहरलाल

•

दादा धर्माधिकारी

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी

प्रकाशक : मंत्री, सर्व सेवा संघ,
राजघाट, वाराणसी
संस्करण : पहला
प्रतियाँ : ३०००; जून १९६६
मुद्रक : नरेन्द्र भार्गव,
भार्गव भूषण प्रेस,
गायघाट, वाराणसी
मूल्य : ५० पैसे

आकाशवाणी, नागपुर के सौजन्य से

Title : GANDHI KA UTTARADHIKARI JAWAHARLAL
Author : Dada Dharmadhikari
Subject : Politics
Publisher : Secretary,
Sarva Seva Sangh,
Rajghat, Varanasi
Edition : First
Copies : 3000; June, '66
Price : 50 Paise

गांधी का उत्तराधिकारी
जवाहरलाल

मेरी भूमिका यह है कि देश के सामने, दुनिया के सामने, जो समस्याएँ होती हैं उनका मैं अध्ययन किया करता हूँ। अपने-आपको जितना अलग रख सकूँ, उतना अलग रखकर अध्ययन करता हूँ। आज आप लोगों के सामने **'गांधी का उत्तराधिकारी जवाहरलाल'** इस विषय का थोड़ा-सा अपना अध्ययन उपस्थित करनेवाला हूँ। इस अध्ययन में, जैसा कि आप देखेंगे, कोई नतीजे, कोई परिणाम, कोई निष्कर्ष आपके सामने उपस्थित नहीं करूँगा। आप लोगों के साथ अध्ययन करने की, विचार करने की, कोशिश करूँगा और यह आशा रखूँगा कि जहाँ तक मैं पहुँचा हूँ, उसके आगे आपका विचार चले।

तुलना असंभव

यद्यपि मैं 'गांधी का उत्तराधिकारी जवाहरलाल' कहता हूँ, तो भी एक बात स्पष्ट कर दूँ कि मैं गांधी और जवाहरलाल की तुलना नहीं करूँगा। एक मनुष्य की किसी दूसरे मनुष्य के साथ तुलना नहीं हो सकती, नहीं होनी चाहिए।

जो मनुष्यों की तुलना करते हैं, मैं समझता हूँ, वे एक बड़ी अहंकार की भूमिका स्वीकार करते हैं। आखिर मनुष्य का नाप क्या है? एक ग्रीक दार्शनिक ने कहा था कि मनुष्य और सारी चीजों का नाप है, लेकिन वह अपना नाप नहीं हो सकता और न एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का नाप हो सकता है। जिसे आप युग या काल कहते हैं, उसकी दृष्टि से भी मनुष्य को हमेशा नापना उपयुक्त नहीं होता। मनुष्य केवल एक ऐतिहासिक घटना ही नहीं है। मनुष्य का जीवन अपने में, इतिहास का निर्माता भी होता है। एक दफा इमरसन ने कहा था :

There is no history, there is only biography– दुनिया में इतिहास है ही नहीं, जीवन-चरित्र ही है। मैं तो आपसे यह निवेदन करना चाहता हूँ कि 'जीवन-चरित्र' भी नहीं, 'जीवन-चारित्र्य' ही है, जिसे आप किसी मनुष्य का 'जीवन-रहस्य' कहते हैं। गांधी के चारित्र्य और जवाहरलालजी के चारित्र्य के बीच कोई तुलना नहीं। एक का दूसरे के साथ जो अनुबंध है, उतना ही आपके समक्ष आज पेश करनेवाला हूँ।

गांधी सत्यनिष्ठ था। जो सत्यनिष्ठ होता है, उसका कोई अनुयायी या शिष्य नहीं होता। अनुयायी और शिष्य कभी, जिसे आप व्याकरण में 'उत्तम पुरुष' या 'प्रथम पुरुष' (First Person) कहते हैं, नहीं होता वह मध्यम पुरुष भी नहीं होता, अधम पुरुष होता है, क्योंकि वह दूसरे व्यक्ति का अनुवाद होता है, प्रतिलिपि होता है, नकल होता है। ऐसा व्यक्ति मूल पुरुष या उत्तम पुरुष नहीं होता। यों हर

व्यक्ति मूल पुरुष होता है। इमरसन फिर मुझे याद आ रहा है : "... Common men ? There are no common men, every talent has its apotheosis."

जितने गुण होते हैं, जितनी शक्तियाँ होती हैं, उनका कहीं-न कहीं दैवी आविष्कार हुआ करता है। ...इसलिए कोई मनुष्य दूसरे की नकल नहीं हो सकता। हर मनुष्य अपने में 'यूनिक', अपूर्व होता है, अद्वितीय होता है। गांधी अपने में अद्वितीय था। जवाहरलाल अपने में अद्वितीय था, फिर भी इन दोनों के जीवन में एक अनुबंध था। Individual का अर्थ है, जो divisible नहीं है, जिसके अंश नहीं होते। हर मनुष्य अपने में एक पूर्णांक है। जवाहरलाल अपने में एक पूर्णांक है, गांधी अपने में पूर्णांक था।

सत्यनिष्ठा

रूसी भाषा में एक कहावत है : You cannot put one man's head on another man's shoulder. —एक आदमी का सिर दूसरे के कंधे पर नहीं रख सकते। लेकिन आज कोशिश क्या हो रही है ?—There is an attempt to put one man's head on everybody's shoulder. यही न कि एक आदमी का सिर सबके धड़ पर, सबके कन्धे पर किस तरह रख दिया जाय ? इसे mass-indoctrination कहते हैं। यानी लोगों के दिमाग में एक खास विचार, एक विशिष्ट विचार को भर देने की कोशिश। इससे होता यह है कि जिसे,–आप efficient disciplined action कहते हैं—

क्षिप्रकारिता और कार्यक्षमता कहते हैं, वे दोनों सुलभ हो जाते हैं। इसलिए उसकी कोशिश अधिक होती है। जो सत्यनिष्ठ होता है, वह दूसरों के दिमाग में अपना विचार भरने की कोशिश नहीं कर सकता। वह तो सत्य की खोज में रहता है, अपने विचार का विक्रेता नहीं होता। उसके पास अगर अपना कोई सिद्धान्त, कोई विचार, कोई दर्शन है, जिसको वह लोगों पर थोपना चाहता है और बेचना चाहता है, तो वह विचारों का 'सौदागर' है, 'सत्यनिष्ठ' नहीं। गांधी सत्यनिष्ठ था। जो सत्यनिष्ठ नहीं होगा, वह व्यक्तिनिष्ठ होगा। जो व्यक्तिनिष्ठ होता है, उसका अपना व्यक्तित्व रह नहीं जाता। इब्सेन ने अपने 'परगिंट' नाटक में परगिंट के व्यक्तित्व का दर्शन किया है। परगिंट का व्यक्तित्व कैसा था ? प्याज जैसा था छिलके के बाद छिलका उतारते चले जाइये, भीतर कुछ है ही नहीं। प्याज तमाम छिलकों का ही बना हुआ है। यह व्यक्तित्व खोखला, खाली, पोला होता है। इस तरह का व्यक्तित्व अलग चीज है। जहाँ एक विचार को, सबके दिमाग में भर देने की कोशिश होती है, वहाँ और सबके व्यक्तित्व रिक्त हो जाते हैं, थोथे हो जाते हैं, खोखले हो जाते हैं।

बुद्धिनिष्ठा

सत्यनिष्ठा में बुद्धिनिष्ठा होती है, विचारनिष्ठा नहीं। विचारनिष्ठा में सम्प्रदायवाद आता है। सम्प्रदायवाद के साथ मतवाद आता है और मतवाद के साथ-साथ अन्त में अहंवाद आता है। इस तरह दूसरे सारे व्यक्ति स्वत्वहीन

होते चले जाते हैं। उनका अपना कुछ शेष रह नहीं जाता। जवाहरलाल में बुद्धिनिष्ठा थी और बुद्धिनिष्ठा का एक बहुत बड़ा लक्षण यह है कि उसमें कभी cocksureness (मताग्रह) नहीं होता, अपने विचार का अनिश्चय होता है। क्योंकि सत्यनिष्ठ मनुष्य हमेशा सत्य की खोज में होता है, तो दूसरे के विचार को समझने की कोशिश करता है। जो समझाना चाहता है, उसका सबसे पहला काम यह है कि वह समझने की कोशिश करे। समझने की कोशिश में दो चीजें आवश्यक हैं attitude of enquiry और humility जिज्ञासा और विनयशीलता। ये दो चीजें न हों, तो सत्यनिष्ठा नहीं हो सकती। जितने बुद्धिनिष्ठ लोग होंगे, उनमें आप एक बात जरूर देखेंगे कि हमेशा कुछ ऐसा मालूम होता है कि उन्हें अपने विचार के विषय में कुछ संशय है, कुछ सन्देह है, कुछ अनिर्णय है। असल में वह अनिर्णय नहीं होता, वह बुद्धि की विनयशीलता होती है, उनमें अपने विचार का दुराग्रह नहीं होता। यह सत्यनिष्ठा जवाहरलाल नेहरू के भाषणों में, लेखों में, उनके रुख में, उनकी मनोवृत्ति में दिखाई देती थी।

गांधी सत्य किसे कहते थे ? गांधी की सत्य की अपनी परिभाषा क्या थी ? ये सब अलग चीजें हैं। मैं आपके सामने गांधी के जीवन के, उनके चारित्र्य के केवल उतने ही पहलू रखनेवाला हूँ, जितने मेरे और आपके काम के हैं। क्योंकि जो सत्य मेरे और आपके काम का नहीं है, गांधी के चारित्र्य के जो गुण और जो विशेषताएँ मेरे और आपके काम की नहीं हैं, वे गांधी के ही काम की थीं। वे उसकी

अपनी थीं। वे सार्वत्रिक नहीं हो सकतीं। सार्वत्रिक वे ही हो सकती हैं, जिनका स्वीकार मैं और आप, अपनी बुद्धि से कर सकते हैं। इसीमें लोकनिष्ठा आती है। लोगों के पीछे जानेवाला लोकनिष्ठ नहीं होता। बर्क ने कहा है :... bidders at an auction of popularity. वे लोकप्रियता के नीलाम में बोली बोलते हैं, लोगों के आगे-आगे नहीं चलते, लोगों की पूँछ पकड़कर चलते हैं। और ये 'लोग' कौन होते हैं? किसीने कहा है—The majority : the people? —a faceless amorphous, huge blot of population. जिसका न कोई रंग है, न रूप है, जिसका न कोई आकार है, ऐसी मानवता का एक धब्बा, एक गोला, यही 'मास' (भीड़) है। But the masses are not the people. जिसे आप 'मास' कहते हैं, वह 'लोक' नहीं। लोकनिष्ठ मनुष्य वह होता है, जिसका लोगों की बुद्धि में विश्वास हो, लोगों की समझने की शक्ति में विश्वास हो। यह विश्वास जिसमें होता है, उसे हम 'डेमोक्रेट' यानी लोकनिष्ठ मनुष्य कहते हैं।

लोकनिष्ठा

इस लोकनिष्ठ मनुष्य का अपनी बुद्धि में जितना विश्वास होता है, उतना ही, बल्कि उससे भी ज्यादा विश्वास, दूसरे की बुद्धि में होता है। कॅथोलिकों के गिरजों में एक अधिकारी होता है *advocatus diaboli* 'शैतानका वकील'। किसी आदमी को संत करार देना हो, तो पूछा जाता है : "...भई, किसीको एतराज है, किसीको आपत्ति है?"... जब कोई खड़ा नहीं होता, तो फिर यह आफिशियल शैतान

की ओर से कैफियत पेश करने के लिए खड़ा होता है—क्योंकि जब तक शैतान की कैफियत सुनी नहीं जाती है, तब तक भगवान् का सत्य, सत्य नहीं साबित होता। ···डेमोक्रेसी में इसे official opposition कहते हैं, लेकिन उसका असली मतलब यह है कि बुद्धि की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

बुद्धि की स्वतंत्रता का अर्थ यह है कि मैं अपनी बुद्धि में जितनी श्रद्धा और जितना विश्वास रखता हूँ, उतनी श्रद्धा और उतना विश्वास दूसरे की बुद्धि में भी रखूँ। सत्यनिष्ठा के इस पहलू में जवाहरलाल दुनिया में अपना एक स्थान रखता था। वह इस दृष्टि से एक अनूठा आदमी था। वह जहाँ तक हो सके, दूसरे की बात अदब के साथ सुनने की कोशिश करता था। आप यह नहीं कह सकते थे कि उसका अपना कोई दर्शन था, कोई सिद्धान्त था, कोई वाद था।

इसीमें से दूसरी चीज यह प्रकट होती है कि अगर दूसरे की बुद्धि में मेरा विश्वास है, तो यथाशक्य मैं दूसरे के साथ जबरदस्ती नहीं करूँगा। दूसरे के साथ जबरदस्ती तब करता हूँ, जब मैं यह मानता हूँ कि वह मेरी बात समझ ही नहीं सकता, मेरी बात समझने की उसमें योग्यता ही नहीं है तब मैं अन्य साधनों का प्रयोग करता हूँ। अन्य साधनों में दो साधन आते हैं—सत्ता का प्रयोग और शक्ति का प्रयोग शक्ति चाहे भौतिक हो, चाहे आध्यात्मिक हो, चाहे तलवार की हो या चाहे चमत्कार की हो···आध्यात्मिक क्षेत्र में चमत्कार और भौतिक क्षेत्र में तलवार! अथवा राजदंड का प्रयोग हो—ये सब शक्ति के प्रयोग हैं। डेमोक्रेसी (लोकसत्ता) में

जहाँ तक हो सके, शक्ति का प्रयोग कम-से-कम किया जाता है। जिस लोकसत्ता का अधिष्ठान (सँक्शन) दंड है, वह लोकसत्ता दंडनिष्ठ है, लोकनिष्ठ नहीं । जिस लोकसत्ता का अधिष्ठान दंड है, उसमें लोकों की सम्मति याने कन्सेंट गौण है । लोकसत्ता जितनी दंड से दूर और सम्मति के नजदीक जाती है, उतनी ही वह लोकनिष्ठ होती है । इसलिए गांधी जब कहता था कि बिना अहिंसा के सत्य की खोज हो नहीं सकती, तो उसका यह मतलब था कि अगर मैं सत्य की खोज करना चाहता हूँ, तो मैं किसी भी बल का प्रयोग कैसे कर सकता हूँ ? जो बुद्धिनिष्ठ होगा, वह बल-प्रयोग कम-से-कम करेगा ।

राज्यनेता बनाम मुत्सद्दी

जवाहरलाल नेहरू में लोकनिष्ठा जितनी अधिक थी, उतनी ही दंड-प्रयोग के प्रति अरुचि थी। शुरू से ही एक अरुचि दंड-प्रयोग के प्रति रही । जिसे 'पावर माइंड' कहते हैं, सत्ता की मनोवृत्ति कहते हैं, वह जवाहरलाल में नहीं थी । जितनी सर्वंकश सत्ता, जवाहरलाल नेहरू के हाथ में थी, उतनी कुछ तानाशाहों को छोड़कर दुनिया में शायद ही किसी और के हाथ में रही होगी। लेकिन उसकी प्रकृति अधिनायक की, तानाशाह की नहीं थी । इसका और एक कारण था । वे यह मानते थे कि जिस तरह शस्त्र-शक्ति के दिन लद गये हैं, उसी प्रकार राज्यसत्ता के दिन भी अब लद गये हैं । लेकिन राज्य-संस्था के दिन अभी तक हैं । इसलिए जवाहरलाल नेहरू राज्यनेता तो था, लेकिन डिप्लोमेट (मुत्सद्दी) नहीं था । डिप्लोमेट की परिभाषा

है lighter vein में। यह ह lighter side of politics. पोलिटिकल साइन्स में एक लाइटर साइड भी होती है। किसीने पूछा : डिप्लोमेट किसे कहते हैं ? तो कहा : When a diplomat says 'yes', he means 'perhaps'; when he says 'perhaps', he means 'no'; and if he says 'no', he is not a diplomat. ... आपसे कोई डिप्लोमेट, कोई मुत्सद्दी, कूट राजनीतिज्ञ अगर यह कहे कि मैं 'करूँगा', तो यह समझ लीजिये कि वह कहता है 'शायद'। अगर वह 'शायद' कहे, तो उसका मतलब आप 'नहीं' समझिये। और अगर 'नहीं' कहता है, तो वह मुत्सद्दी नहीं है, वह डिप्लोमेट नहीं है। एक डिप्लोमेट और दूसरी 'वूमन' स्त्री। When a woman says 'no', she means 'perhaps', 'जब वह 'नहीं' कहती है, तो 'शायद' समझो। If she says 'perhaps' she means 'yes', जब वह 'शायद' कहे, तो 'हाँ' समझो। And if she says 'yes', she is not a woman, और वह 'हाँ' कहे, तो वह स्त्री नहीं है। जवाहरलाल नेहरू में एक तरह की इंटेग्रिटी थी, एक तरह की सचाई थी, ईमानदारी थी। जो मन में होता था, वह कहता था, इसीलिए वह लोकनेता हो सका, राज्यनेता भी हो सका। लेकिन मुझे शक है कि वह एम्बेसेडर हो सकता था। एम्बेसेडर के बारे में कहा जाता है कि An Ambassador is an honest man, sent abroad to lie on behalf of the common-wealth. किसी ईमानदार आदमी को चकमा देने के लिए जब हम विदेश में भेज देते हैं, तो वह कुशल एलची कहलाता है। He knows very well what he wants. He under-

stands very well what his opposite number wants and then he puts what he wants in terms of what his opposite number wants. कुशल एम्बेसेडर की यह विशेषता जवाहरलाल में नहीं थी।

सत्य और अहिंसा का प्रयोग

गांधी की सत्यनिष्ठा, गांधी की अहिंसा, दोनों का विनियोग जितना एक राज्यनेता कर सकता था, देश के क्षेत्र में, राष्ट्रीय क्षेत्र में और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उतना उन्होंने किया। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अहिंसा शांति का रूप लेकर आती है, पंचशील का रूप लेकर आती है। The rule of Law in International affairs—अर्थात् शक्ति का प्रयोग नहीं होगा। शस्त्र का प्रयोग नहीं होगा, सभ्य जीवन के नियमों का प्रयोग होगा। विधि-विधान का और संविधान के नियमों का प्रयोग होगा। गांधी की अहिंसा का अंतर्राष्ट्रीयता के क्षेत्र में विनियोग था, और मैं समझता हूँ कि इस दृष्टि से जवाहरलाल गांधी की कार्बन कापी तो था ही नहीं, प्रतिलिपि तो था ही नहीं, लेकिन संशोधित संस्करण भी नहीं, नव-संस्करण भी नहीं था। वह तो उत्तराधिकारी था उन सिद्धान्तों का, जिन सिद्धान्तों का गांधी प्रतिनिधि था, प्रवर्तक नहीं, निर्माता नहीं, जनक नहीं।

अब थोड़ा आगे चलिये। मैं गांधी के जीवन के सभी पहलू आपके सामने नहीं रख सकता, लेकिन जो उनके विशेष पहलू माने जाते हैं, जिनके विषय में यह माना जाता है कि

जवाहरलाल में और गांधी में एक बहुत बड़ा मेल था, उन पहलुओं को मैंने पहले ले लिया। एक पहलू है सत्यनिष्ठा। जो सत्यनिष्ठ होगा वह सम्प्रदायनिष्ठ नहीं हो सकता, व्यक्तिनिष्ठ नहीं हो सकता, विचारनिष्ठ नहीं हो सकता। ये दोनों चीजें लोकसत्ता के साथ मिली हुई हैं।

लोग कहते हैं कि लोकसत्ता में से शक्ति पैदा नहीं होती, कोई काम सुचारु रूप से, शीघ्रतापूर्वक नहीं किया जा सकता। एक बार चर्चिल से पूछा गया था कि देखिये, दूसरी जगह कितनी जल्दी सब काम होते हैं, कितनी अच्छी तरह से होते हैं, तो डेमोक्रेसी के बारे में आपकी क्या राय है? चर्चिल ने जवाब में कहा कि "it is the worst form of government, except the others." —हमारी जो लोकतांत्रिक पद्धति है, वह बहुत रद्दी है, परन्तु दूसरी पद्धतियों से कम बुरी है। यह सबसे बदतर है, लेकिन दूसरी पद्धतियाँ इससे भी बदतर हैं। इसलिए हम इसके पीछे हैं। क्योंकि इसमें मनुष्यों का सत्त्व, मनुष्यों का मूल्य बना रहता है। सुखी मनुष्य और मानवीय मनुष्य इन दोनों में अन्तर है। सुखी मनुष्य दुनिया में बहुत-से हो सकते हैं—पशु भी हैं। इसी लिए मिल ने कहा था: It is better to be a man dissatisfied than a pig satisfied, a Socrates dissatisfied than a fool satisfied and if the fool thinks otherwise, it is because he knows only his side of the case. —बेवकूफ अगर यह समझता है कि सन्तुष्ट बेवकूफ रहने में ही सुख है, असंतुष्ट मानव रहने में दुःख है, तो स्वतंत्रता का मूल्य वह नहीं जानता है। लोकतांत्रिक पद्धति में

मनुष्य का मूल्य है, इसलिए अपने अध्ययन में मैं इस मुकाम पर, इस मंजिल पर पहुँचा हूँ कि अच्छी-से-अच्छी तानाशाही से भी घटिया-से-घटिया लोकसत्ता बेहतर है, श्रेयस्कर है।

स्वदेशी

उसके बाद गांधी की एक तीसरी चीज आती है—स्वदेशी। स्वदेशी की व्याख्या गांधी ने अपने ढंग से की थी। वह एक अनोखा आदमी था। कुछ ऐसी बातें कह देता था कि जो सुनने में बड़ी अटपटी मालूम होती थीं। उसने कहा : 'पड़ोसी की सेवा करना स्वदेशी है।' सारे धर्मों ने यह कहा। ईसा ने भी कहा, पड़ोसी से प्रेम करो, और उसे उतना ही प्यार करो, जितना कि अपने को प्यार करते हो। सारे धर्मों ने पड़ोसी से प्रेम करने पर जोर दिया। इंग्लैंड में दो आदमी बड़े मजे के हुए। दोनों लेखक थे, कुछ सनकी थे, लेकिन बड़े पते की बात कहनेवाले थे। एक जॉर्ज बर्नार्ड शॉ था और दूसरा जान बुल का प्रतिनिधि जी० के० चेस्टरटन। जी०के० चेस्टरटन ने 'नेबर'–पड़ोसी–पर एक निबन्ध लिखा : "We make our friends, we make our enemies, but God makes our next door neighbour. Hence he comes to us clad in all the careless terror of nature. He is as strange as the stars, as reckless and indifferent as the rain. He is a man, the most terrible of beasts......... We have to love our neighbour because he is there —a much more alarming reason for a much more serious operation. He is the sample of humanity given us. Precisely because he may be anybody, he is everybody. He is a symbol because he is an accident."

अपना दुश्मन और अपना दोस्त, तो हम अपने मन से बनाते हैं। वह हमारी मर्जी की बात है, लेकिन हमारा पड़ोसी कौन हो, उसका विधाता तो भगवान् ही है, उसे हम नहीं बना सकते। वह परिभाषा करते हुए कहता है कि दुनिया में मनुष्य दूसरे सब संकट सह सकता है, कभी-कभी अपनी जान भी दे डालता है। चाहे जैसी यंत्रणाएँ, क्लेश सहता है, लेकिन ये चीजें कभी उसके शौक की होती हैं, कभी सनक की होती हैं। लेकिन मानवता का एक नमूना, जो भगवान् का दिया हुआ होता है, संयोग से हमारा पड़ोसी बन जाता है। इसलिए हमारे लिए वह मानवता का प्रतीक है। गांधी कहता था : तेरा पड़ोसी तेरे लिए मानवता का सगुण रूप है।

पंचशील

जवाहरलाल नेहरू ने इस संकेत को अंतर्राष्ट्रीय जीवन में दाखिल किया और उसका नाम 'पंचशील' रखा। non-alignment अपने में एक व्यावर्तक, निषेधात्मक संज्ञा है। व्यवहारज्ञों की व्यावहारिक नीति है। good fences make good neighbours. मकान की चौहद्दी की दीवार अगर अच्छी हो, तो पड़ोसी एक-दूसरे की बगल में बगैर लड़ाई किये रह सकते हैं, इतना ही उसका मतलब होता है। लेकिन इतने से उनमें आपस में प्रेम नहीं पैदा होता। प्रेम पैदा होने के लिए भावरूप शक्ति आवश्यक होती है। यह भावरूप शक्ति वैज्ञानिक होनी चाहिए।

यह वैज्ञानिक शक्ति कौन-सी हो सकती है ? आधुनिक वैज्ञानिक, समाज-विज्ञान का बहुत बड़ा प्रवक्ता फ्रांस का शार्डिन है । 'Building the earth' और 'The phenomenon of man', ये दो पुस्तकें इसने लिखी हैं। वह कहता है : nuclear physics 'एनरजी'—'शक्ति' से आगे चली गयी है। वह कहता है :—The supreme energy is love. Love is the supreme cosmic energy—formidable, universal, mysterious. प्रेम ही अंतिम ऊर्जा है, अंतिम शक्ति है। भौतिक और आध्यात्मिक ऐसा भेद अब नहीं रहा। यही अंतिम शक्ति है। और यह अंतिम शक्ति कॉस्मिक है, सृष्टि में यही अंतिम शक्ति है। और यह अंतिम शक्ति व्यक्त कैसे होती है ? It expresses itself in relationship. मनुष्य का मनुष्य के साथ संबंध । co-existance (सह-अस्तित्व) नहीं और पड़ोस नहीं, vicinity (प्रतिवेश) नहीं। एक-दूसरे की अगल-बगल में रहना ही नहीं, एक-दूसरे के साथ रहना। प्रेम की शक्ति संबंध में व्यक्त होती है । मुझमें और मेरे पड़ोसी में संबंध किस कारण होता है ? वह बाँधनेवाला डोरा कौन-सा है ? The bridge is love. प्रेम दोनों को जोड़ता है । गांधी ने इसे 'स्पर्शभावना' कहा था।

इस देश में अलग-अलग भाषाएँ बोलनेवाले, अलग-अलग सम्प्रदायों को माननेवाले, अलग-अलग मंदिरों और मस्जिदों में पूजा करनेवाले लोग एक-दूसरे के निकट रहते हैं । वे एक-दूसरे के साथ किस प्रकार रहें ? इसके लिए एक संकेत गांधी ने दिया "सर्व-धर्म समभाव ।" लेकिन जवाहरलाल

नेहरू इस नतीजे पर पहुँचा कि सर्व-धर्म समभाव हो ही नहीं सकता। मुख्य कारण यह है कि धर्म में से ईश्वर को, अध्यात्म को और नीति को जब आप निकाल देते हैं और फिर जो कुछ बचता है, उसीको लोग धर्म कहते हैं। ईश्वर, अध्यात्म और नीति तो सारे धर्मों में समान है, इसलिए उसे कोई धर्म नहीं कहता। मैं सच बोलूँ और आप भी सच बोलें, इसलिए मैं हिन्दू नहीं हो जाता और आप ईसाई नहीं हो जाते। लेकिन मेरे चोटी और जनेऊ हो, और आपके क्रॉस हो तो चाहे आप और मैं, दोनों, रोज चौबीस घंटे में अड़तालीस बार झूठ बोलते रहें, तब भी मैं हिन्दू हूँ और आप ईसाई हैं। यह धर्म है। यानी धर्म में से जब आप नीति को, सदाचार को, ईश्वर को और अध्यात्म को निकाल देते हैं, तब जो बचता है, वही धर्म कहलाता है। इसलिए गांधी के दूसरे उत्तराधिकारी विनोबा को कहना पड़ा कि इस विज्ञान के युग में अब राजनीति और धर्म के दिन लद गये, सम्प्रदाय के दिन लद गये— religion और politics के दिन लद गये हैं। जवाहरलाल नेहरू हमेशा यह बात दुहराया करते थे।

अब इसे हम secularism भले ही कह लें, लेकिन यह secularism वह है, जो original था, शुरू में जो निकला था। उसका प्रवर्तक जहाँ तक मुझे याद है, होलीओक था। होलीओक और चार्ल्स ब्रेडला वगैरह। वे लोग यह कहते थे कि धर्म में से ईश्वर, अध्यात्म और सदाचार इन तीनों को निकाल देने के बाद जो बचता है, उससे हमको एतराज है। हम मनुष्यों को एक-दूसरे के साथ

रहना सिखाना चाहते हैं, इसके लिए एक-दूसरे के साथ प्रेम करना सिखाना होगा। और यह प्रेम कैसा ? मेरा और आपका वही संबंध सही संबंध है, जो आपको भी उठाता है और मुझे भी उठाता है। शार्डिन ने एक रूपक रचा है। वह कहता है कि ठीक है तुम अलग-अलग हो, चढ़ना शुरू कर दो। जीवन एक आरोहण है। और जब तुम टॉप पर, शिखर पर पहुँच जाओगे, तो सब एक ही जगह आ जाओगे। शिखर पर तो अलग-अलग नहीं रह सकते। All things that rise converge उत्कर्ष जितनी चीजों का होता है, वे अंत में जाकर एक हो जाती हैं। हमारी जितनी विभिन्नताएँ हैं, हमारी जितनी विशेषताएँ हैं, ये सारी विशेषताएँ reciprocally enriching परस्पर सम्पन्नता की पोषक होनी चाहिए। मेरी विशेषता आपकी विशेषता की पोषक हो। आपकी विशेषता मेरी विशेषता की पोषक हो। इस तरह सबकी विशेषताएँ जब परस्पर पोषक होती हैं, तब सब एक मुकाम पर पहुँचते हैं--जिसे हम मानवता के इवोल्यूशन का, विकास का मुकाम कहते हैं और यहाँ जब मनुष्य पहुँचता है, तब हम कहते हैं कि गांधी जैसा मनुष्य आया। लोगों ने पूछा कि गांधी जैसा मनुष्य क्यों आ सका ? The whole cosmos became conscious. मानो सारी सृष्टि ही चेतन हो गयी और सारी सृष्टि के चेतन होने के बाद उसकी आत्मा ने जिस मानव का रूप धारण किया, उसे हमने गांधी कहा। सारा अंतर्राष्ट्रीय जगत् जिस दिन चेतन होगा, उस दिन यह कहा जायगा कि उसकी मूर्ति नेहरू था। सारे अंतर्राष्ट्रीय जगत् की चेतना का, मानवीय

चेतना का प्रतीक, यह व्यक्ति था। इसलिए हम कहते हैं कि यह गांधी का उत्तराधिकारी था।

चौमुखा मोर्चा

एक चीज और छोटी-सी कहूँगा, जिसकी तरफ आपका ध्यान दिलाना मुझे आवश्यक मालूम होता है। आज दुनिया में जिसे four-pronged thrust कहते हैं, चार दिशाओं से एक चौमुखा मोर्चा जारी है। पहला है, राष्ट्रीय मोर्चा। जो लोग गुलाम थे, उपनिवेशों में रहते थे, उनमें एक आत्म-चेतना और आत्म-प्रत्यय आ रहा है। जो काले थे वे कहते हैं, हमारे रंग को भी पहचानना पड़ेगा, स्वीकार करना पड़ेगा। जिनकी संस्कृतियाँ भिन्न थीं वे कहते हैं, हमारी संस्कृतियों को भी स्थान देना होगा। और जिन लोगों की संसार में रहन-सहन की अपनी कुछ विशेषताएँ थीं, वे कहते हैं इन विशेषताओं को भी स्वीकार करना होगा। एक तो यह मोर्चा है, जिसे हम National revolution कह लें। क्रांति का दूसरा मोर्चा है, class revolution जो दरिद्र हैं, विपन्न हैं, गरीब हैं, वे यह कहते हैं कि हमको भी उनकी बराबरी पर आना है, जो खुशहाल हैं। जिनका जीवन समृद्ध और सम्पन्न है, जिनको किसी चीज की कमी नहीं, हमको उनकी बराबरी पर आना है। तीसरा मोर्चा वह है, जिसे आप टेकनॉलॉजिकल रिव्होल्यूशन कह सकते हैं। टेकनॉलॉजी का मतलब विज्ञान नहीं, यंत्र-विद्या है। यंत्र-विद्या का यह तीसरा मोर्चा है। जो पिछड़े हुए समाज हैं, वे उन समाजों की बराबरी पर आना चाहते हैं, जो समाज आज प्रगति कर चुके हैं।

इसमें एक बात सोचने की है। टेकनॉलॉजी के बारे में किसीसे पूछा गया तो उसने बतलाया कि it is the father of great organization and the grand-father of great governments. बड़े-बड़े कारखाने, बड़ी-बड़ी संगठनाएँ, बड़े-बड़े संगठन यंत्र-विद्या की कोख से पैदा हुए और फिर इसीलिए राज्य-व्यवस्था का भी संगठन उस प्रकार करना पड़ा है। प्रचंडता ! ··· आप देखते हैं कि पश्चिम में प्रचंडता नारा है आज के युग का ।··· लोगों की जो बस्तियाँ हैं, उपनिवेश हैं--प्रचंड बड़े-बड़े हैं, कारखाने बड़े-बड़े हैं--सरकारें बड़ी-बड़ी हैं। सेनाएँ बड़ी-बड़ी हैं। आप हैरान हो जायेंगे अगर वे आँकड़े, वे अंक, पढ़ेंगे। आज सब बातें astronomical figures में ही होती हैं। जो आँकड़े हैं, उनमें किसी एक आँकड़े का विश्वास दूसरा आँकड़ा नहीं करता। They say fact is stranger than fiction, but statistics is stranger still. वस्तुस्थिति कभी-कभी कल्पना से अधिक विचित्र होती है। लेकिन वह कहता है कि ये आँकड़े सबसे विचित्र होते हैं। इन आँकड़ों का कोई ठिकाना नहीं। बड़े-बड़े आँकड़े हैं। इनमें मनुष्य का मनुष्य के साथ का संबंध क्षीण हो जाता है। मनुष्य का जीवन 'इम्परसनल' (व्यक्ति-निरपेक्ष) होता है। व्यक्ति-निरपेक्ष से मेरा मतलब मानव-निरपेक्ष है। जहाँ जीवन मानव-निरपेक्ष होता है, वहाँ मनुष्य या तो साधन बन जाता है, या आँकड़ा बन जाता है, या नाम बन जाता है। मनुष्य मनुष्य नहीं रहता। वह संकेत बन जाता है। एक दफा मैं रोटरी क्लब में गया था, तो उन्होंने बताया कि

हमारे रोटरी क्लब में औसत हाजिरी ८५.६ रही। मैंने कहा : ८५ तो ठीक है, लेकिन यह दशमलव छह आदमी कैसे आया होगा ? The average is a fiction. वह एक नाप है। नाप तो हमेशा फिक्शन होता है। एव्हरेज तो नाप है, वास्तविकता नहीं है। गया में हर साल हैजा होता है। एक बार वहाँ की म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन ने मुझसे कहा कि पिछले साल पाँच फीसदी आदमी मरे थे, इस साल ढाई फीसदी आदमी मरे। हम लोग ट्रेन में जा रहे थे। एक स्त्री बैठी हुई थी। वह रोने लगी। मैंने पूछा : "आप क्यों रो रही हैं बहन ?" कहने लगी : "यह ढाई फीसदी कह रहा है और पिछले साल की पाँच फीसदी बतला रहा है और मेरा पति सौ फीसदी मर गया है। अब मैं क्या करूँ ? वह तो पूरा ही मर गया।"

मैंने उदाहरण सिर्फ इसलिए दिया कि मैं इस चीज को मानव-विमुख कह रहा हूँ। संगठन में सदस्यता होती है, मानवता नहीं होती। मैं एक संस्था का सदस्य हो सकता हूँ, लेकिन मनुष्य नहीं रह जाता। चाहे मेरी पार्टी हो, चाहे कांग्रेस पार्टी हो, चाहे कम्युनिस्ट पार्टी हो, या संस्था हो। संस्था में सदस्यता है। सेंट पॉल ने कहा था : We are all members of one or another. इस अर्थ में मैं नहीं कह रहा हूँ। सदस्यता अलग चीज है, सम्बन्ध अलग चीज है। आपका आर्थिक संयोजन भी ऐसा होना चाहिए, जिसमें मनुष्य का मनुष्य के साथ संबंध स्थापित हो सके, रिश्तेदारी कायम हो सके। जैसे कुटुम्ब में रिश्तेदारी कायम होती है, इस तरह समाज में रिश्तेदारी कायम होनी चाहिए।

चौथी चीज है international revolution. इसमें 'have-not' nations and 'have-got' nations—कुछ विपन्न देश हैं और कुछ सम्पन्न देश हैं। इनमें होड़ है बराबरी पर आने की।

इन चारों प्रकार के मोर्चों में नेहरू सक्रिय रूप से शामिल था। और उसने जो कुछ काम किया, वह इफेक्टिव्ह किया। याने परिस्थिति पर जितना परिणाम वह कर सकता था, भारत की परिस्थिति को लेकर, उतना परिणाम उसने किया। गांधी के जो सिद्धान्त थे, उन सिद्धान्तों में से सारे तो मैंने रखे नहीं, लेकिन दो-चार उदाहरण के लिए सामने रख दिये हैं। एक तरफ गांधी के सिद्धान्त रखिये और दूसरी तरफ सार्वजनिक जीवन में, राजनैतिक जीवन में, नेहरू ने जैसा उनका विनियोग किया, उसको देखिये। तो आप कह सकेंगे कि वह उत्तराधिकारी था।

संगठित स्वार्थ

आज सबसे बड़े दुर्भाग्य और दुःख का विषय यह है कि परिस्थिति नागरिक के हाथ से निकलकर राजनीतिज्ञ के हाथ में जा रही है। जैसे औजारों के विषय में परिस्थिति यह है कि औजार न तो उत्पादक के हाथ में है, न उपभोक्ता के हाथ में है—'बिचौनिये' के हाथों में है, जिसे आप 'मिडिलमैन' कहते हैं। धर्म में भी परिस्थिति पुरोहितों के हाथ में चली गयी थी। राजनीति में, सार्वजनिक जीवन में भी एक 'बिचौनिया' होता है। आज की राजनीति इस प्रकार की है। There are interest groups. स्वार्थ संगठित होते

है। विद्यार्थियों का स्वार्थ संगठित हुआ, शिक्षकों का स्वार्थ संगठित हुआ। युनिव्हर्सिटी के अधिकारियों का स्वार्थ संगठित हुआ। फिर युनिव्हर्सिटी के नौकरों का, एम्प्लाइज् का स्वार्थ संगठित हुआ, डॉक्टरों का स्वार्थ संगठित हुआ, मजदूरों का स्वार्थ संगठित हुआ——सबके स्वार्थ संगठित हुए। लेकिन सिर्फ संगठित स्वार्थ अपने में कार्यान्वित नहीं होता, कार्यक्षम नहीं होता, परिणाम-क्षम नहीं होता। वह परिणाम-क्षम कब होता है? when this interest group becomes pressure group——जब उसमें इतनी शक्ति आती है कि उसका दबाव सारे समाज पर पड़े। यह दबाव कब पड़ता है? when this pressure group becomes veto-group——जब सारे समाज का काम यह बन्द कर सकता है।

मैं सिर्फ उदाहरण दे रहा हूँ, किसीकी आलोचना नहीं कर रहा हूँ। समाज में भंगी हैं, उनकी संख्या बहुत नहीं है। कॉलेज के प्रोफेसर्स, शिक्षक हड़ताल कर दें, तो बहुत नुकसान नहीं होता, क्योंकि दूसरे बहुत मिल जाते हैं। लेकिन भंगी अगर हड़ताल कर दें, तो समाज की नब्ज ठंडी हो जाती है। उनमें यह 'व्हेटो' की शक्ति है। अब ये जो interest groups और pressure groups और veto groups होते हैं, संगठित स्वार्थ होते हैं। इन संगठित स्वार्थों में जो बिचौनिया या दलाल होता है, उसका नाम राजनीतिज्ञ है and he has become the keyman, और वह कुंजी का आदमी बन गया है आज के समाज का।

इसका कारण क्या है? The citizen is uncommi-

tted. 'अनकमिटेड' तो उसको रहना ही है, वह किसी एक विचार का कायल नहीं, किसी एक पंथ, सम्प्रदाय, पक्ष का नहीं है, लेकिन इसका मतलब यह क्यों हो कि he is indifferent ? वह उदासीन क्यों ? जिस लोकसत्ता में नागरिक उदासीन रहता है, उसमें प्राण नहीं रहता। वह लोकसत्ता उस बारात की तरह है, जिसमें बाराती तो सब आये हैं, लेकिन दूल्हे का पता नहीं। लोकसत्ता की केंद्रीय विभूति नागरिक हैं। नागरिक में विचार की सामर्थ्य, निर्णय की शक्ति, पुरुषार्थ कैसे दाखिल हो, इसका सतत चिन्तन होना चाहिए। यह चिन्तन, मैं समझता हूँ, कि गांधी की नीति में था। क्योंकि गांधी यह कहता था कि सारी मानव-जाति एक तरफ हो, और एक ही मनुष्य दूसरी तरफ हो, तो मानव-जाति को कोई अधिकार नहीं है कि उस एक मनुष्य की आवाज को दबायें, उसी तरह उस एक व्यक्ति को भी यह अधिकार नहीं है कि वह मानव-समाज की आवाज को दबाये। एक व्यक्ति अगर सबकी आवाज को दबाता है, तो हम उसे तानाशाह कहते हैं, अत्याचारी कहते हैं, लेकिन अब एक समुदाय किसी एक व्यक्ति की आवाज को दबाता है तो वह भी अत्याचारी है और वह शतगुणित अत्याचारी है। अत्याचार का गुणा हो गया है, गुणाकार हो गया है। इस दृष्टि से अगर आप विचार करें, तो मैं समझता हूँ कि गांधी ने जिन सिद्धान्तों का अपनी भूमिका से, आध्यात्मिक भूमिका से प्रतिपादन किया था, उन सिद्धान्तों का विनियोग अपनी एक स्वतंत्र भूमिका से राजनीति के क्षेत्र में, समाजनीति के क्षेत्र में जवाहरलाल ने करने की कोशिश की। Alice in Wonderland में

एक प्रसंग है—वह जो रेड क्वीन है, वह एलिस से कहती है: "You see here, it has taken all the running you can do to keep in the same place. And if you want to get somewhere else, you will have to run at least twice as much as that."—'तू जिस मुकाम पर है, वहाँ रहने के लिए तुझे इतनी दौड़धूप करनी पड़ी है। तूने अभी देखा। अब थोड़ा भी अगर आगे जाना चाहती है, तो कम-से-कम इससे दूनी गति, दूनी रफ्तार से तुझे दौड़ना होगा।' जवाहरलाल नेहरू इस देश को जहाँ पर छोड़ गया है, वहाँ पर रहने के लिए भी हमको कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। और अगर आगे बढ़ना है तो कम-से-कम दुगुना परिश्रम करना ही पड़ेगा। ●

प्रश्नोत्तर

१. प्रश्न : टेक्नॉलॉजी (यंत्र-विद्या) के प्रति गांधीजी और जवाहरलालजी के रुख में अन्तर था। वह किस प्रकार का था ? गांधीजी क्या चाहते थे ?

उत्तर : टेक्नॉलॉजी का अर्थ है यंत्र-शास्त्र या उपकरणों की विद्या। उपकरण, जिसे आप इन्स्ट्रूमेन्ट कहते हैं, किसलिए है ? यह चश्मा है, मेरी आँख की ताकत को बढ़ाने के लिए है कि आँख की जगह लेने के लिए है ? अगर आँख की जगह चश्मा ले ले, तो चश्मा खो जाने पर आँख भी खो जायगी। आँख में रोशनी कम हो गयी हो, तो उस रोशनी को बढ़ाने के लिए चश्मा है। चश्मा अगर सायन्स है, तो आँख कम साइंटिफिक नहीं। जितने उपकरण हैं, वे मनुष्य के अवयवों की शक्ति बढ़ाने के लिए हैं। मुक्के की शक्ति को बढ़ाने के लिए हथौड़ा है, पैरों की गति को बढ़ाने के लिए बाइसिकल है, और भी वेग बढ़ाने के लिए मोटर है। तो इसमें कोई एतराज नहीं है। मोटर में बैठिये, एरोप्लेन में जाइये, एक जगह से दूसरी जगह पाँच मिनट में जाइये··· मेहरबानी इतनी ही कीजिये कि पैर साबित रहें। मनुष्य का विकास उसके अवयवों की शक्ति के विकास में और उसके व्यक्तित्व के विकास में है। मनुष्य की उद्योग-शक्ति, परिश्रम-शक्ति

और कला--इन तीनों का उपयोग उसके व्यवसाय में होना चाहिए। उसका व्यवसाय ऐसा हो, ताकि इन तीनों की शक्ति बढ़े। उसके व्यक्तित्व की विशेषताएँ बढ़ें, उसके अवयवों की शक्ति बढ़े और उसकी बुद्धि का और कला का विकास हो।

कला का अनुबंध संयोजन के साथ होना चाहिए। नहीं तो होगा यह कि संयोजन एक तरफ हो जायगा, कला दूसरी तरफ हो जायगी। और पिछले दिनों जैसी हालत थी, वह हालत होगी। सभ्य नागरिक एक तरफ, कलाकार दूसरी तरफ। राजाजी का एक प्रसंग है--आप जानते हैं राजाजी एक बड़ा विदारक बुद्धिवाला ऐसा आदमी है, penetrating intellect वाला, और मैंने एक दफा विनोद में कहा भी था--off the record कह रहा हूँ--राजाजी को भगवान् ने जब बनाया तो अमात्य माधव याने विद्यारण्य स्वामी, क्रॉमवेल और चाणक्य इन तीनों को घोल करके बनाया। यह off the record—मजाक की बात मैंने कही। श्री रुक्मिणी अरुंडेल उनको एक दफा ले गयीं और एक नाच दिखाया। जो बहन नाच रही थी, वह यूरोप से आयी थी। बिलकुल 'बाथ कास्ट्यूम' में नाची। राजाजी से पूछा गया कि आपको कैसा लगा ? उन्होंने कहा : "नाच-वाच तो ठीक था; लेकिन बाथ कास्ट्यूम की क्या जरूरत थी ?" पूछनेवाले ने कहा : "हमारे शिव-पार्वती भी ऐसे ही रहते थे। पार्वती भी भीलनी बनकर ऐसे ही नाची थी।" तो उन्होंने कहा कि फरक इतना ही है कि पार्वती

नाच दिखाने तो नहीं गयी थी, स्वयम् नाची थी। Vicarious living (दूसरे की मार्फत जीवन) जिस कला में होता है, वह कला कला नहीं। कला vicarious (परप्रत्ययात्मक) नहीं होती, डाइरेक्ट (प्रत्यक्ष) होती है।

जवाहिरलाल नेहरू onlooker (दर्शक) नहीं था, participant (सहभागी) था। वह आदिवासियों के नाच में भी शामिल हो जाता था। उसमें उसे शरम मालूम नहीं होती थी। तो जब उत्पादन में प्रत्यक्ष भाग नहीं होता, तो उत्पादन का कला के साथ अनुबंध नहीं रह जाता। यंत्रों की योजना हो, टेक्नॉलॉजी हो, लेकिन टेक्नॉलॉजी ऐसी हो, जिससे मनुष्य की अपनी कला का विकास हो। वह कैसे हो सकता है? वह बताना विशेषज्ञों का काम है। क्या चाहिए, मैं इतना ही कह सकता हूँ। मकान कैसा चाहिए, मैं बतला सकता हूँ। ड्राफ्ट्समैन उसका नकशा बनाये।

२. प्रश्न: तो फिर जवाहरलालजी गांधीजी के उत्तराधिकारी किस अर्थ में थे?

उत्तर: गांधी के तीन सिद्धान्त आपके सामने रखे। एक सिद्धान्त था—सत्य का। सत्यनिष्ठा और मानवनिष्ठा में अन्तर नहीं हो सकता। इसलिए नहीं हो सकता कि जब कोई सत्य का आग्रह करने लगता है तो उसके लिए मनुष्य गौण हो जाता है। कोई एक ideology याने खास विचार जब मुख्य हो जाता है, तो मनुष्य गौण हो जाता है। इसलिए ईश्वर के, धर्म के और विचार के नाम पर जितनी

हत्या दुनिया में हुई, जितना अत्याचार हुआ, उतना न तो स्त्री के लिए हुआ और न धन के लिए। क्योंकि उसमें मनुष्य पुण्य मानता है। तो गांधी की जो सत्यनिष्ठा थी, उस सत्य-निष्ठा को मैं नेहरू की मानवनिष्ठा (humanism) के साथ मिलाता हूँ। मनुष्यनिष्ठा, मानवनिष्ठा ही असल में ईश्वरनिष्ठा या सत्यनिष्ठा है। पहले तो गांधी ने कहा : ईश्वर ही सत्य है। बाद में यह छोड़ दिया उसने। जब गांधी ने यह देखा कि ईश्वर भी अलग-अलग है, हिन्दू का अलग है, ईसाई का अलग है, मुसलमानों का अलग है और यदि मैं यह कहूँ कि ईश्वर ही सत्य है, तो इतने अलग-अलग सत्य हो जायेंगे। तो उसने अपना सूत्र उलट दिया। उसने कहा कि सत्य ही ईश्वर है और सत्य जब ईश्वर है तो उसका मतलब यह है कि सत्य एक ही है। मेरा और आपका सत्य अगर दो हो जाते हैं तो टक्कर मेरी और आपकी होती है। सत्य अलग रह जाता है। इसलिए जिसे आप scientific humanism (वैज्ञानिक मानव्यवाद) कहते हैं, उसमें भी विज्ञान से श्रेष्ठ मनुष्य है। Science is great, but man is greater—अन्त में विज्ञान का भी विधाता मनुष्य है। इसलिए हम गांधी के दर्शन से या किसीके भी दर्शन से मनुष्य को श्रेष्ठ मानते हैं। "**न मनुष्यात् श्रेष्ठतरम् हि किंचित्।**" महाभारत का एक वचन है कि मनुष्य से श्रेष्ठ और कुछ नहीं। मनुष्य को हम सर्वोपरि मानते हैं। सत्य की खोज में एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की सहायता करेगा। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की सहायता लेगा। इसीमें से अहिंसा

निष्पन्न होती है। इसलिए मैंने विज्ञानयुक्त मानवनिष्ठा में और गांधी के अध्यात्म में कोई विरोध नहीं देखा है। विशेषताएँ हो सकती हैं—दो भिन्न चीजें हैं, लेकिन दो अलग चीजें हमेशा दो विरोधी चीजें नहीं होतीं। इसलिए इन दोनों में मैंने विरोध नहीं देखा।

लेखक की अन्य रचनाएँ

सर्वोदय-दर्शन

'सर्वोदय' केवल शब्द और विचार नहीं, एक समग्र जीवन-दर्शन है। सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, नीतिगत आदि अनेक पहलुओं से तटस्थ वैज्ञानिक की भाँति दादा धर्माधिकारी ने इस ग्रन्थ में सर्वोदय की शास्त्रीय व्याख्या की है। अनेक ग्रन्थियों, कुण्ठाओं, भ्रान्तियों को खोलनेवाली यह पुस्तक है। चौथा संस्करण। पृष्ठ ३२४, मूल्य ५.०० रु०।

अहिंसक क्रान्ति की प्रक्रिया

लेखक की यह कृति करुणामूलक साम्ययोग-प्रधान अहिंसक क्रान्ति के समझने के लिए अप्रतिम है। क्रान्ति और सो भी अहिंसक। अहिंसा की जीवनव्यापी विराटता और उसके लिए शक्ति-स्रोतस्विनी, बलदायिनी, विधायक, लोकनिष्ठ, विभूतिमय क्रान्ति की प्रक्रिया को समझने के लिए हर व्यक्ति के काम की दिशा-बोधक रचना। दूसरा संस्करण। पृष्ठ ३२८, मूल्य ४.०० रु०।

मानवीय निष्ठा

इस पुस्तक में दादा के उन तेजस्वी और मूलगामी विचारों का दर्शन है, जो व्यक्ति को समष्टि की समग्रता का बोध कराते हैं। इसे हम सर्वोदय के बुनियादी सिद्धान्तों का दर्पण कह सकते हैं। पृष्ठ २००, मूल्य २.०० रु०।

स्त्री-पुरुष सहजीवन

स्त्री-पुरुष के पारस्परिक सम्बन्ध, व्यक्तित्व, उत्तरदायित्व, धार्मिक विधि-विधानों की खींचतान, परिभाषाओं की सूक्ष्म आलोचना, परस्पर विरोधिता आदि का शास्त्रीय, वैज्ञानिक, भावनागत और मानवनिष्ठ विवेचन। दृष्टान्तों के प्रकाश में जीवन का मूल्यांकन। दूसरा संस्करण। पृष्ठ १८०, मूल्य १.५० रु०।

गांधी पुण्य-स्मरण

गांधी के जन्म और निर्वाण-दिवसों पर दादा के किये गये कतिपय प्रवचनों का संकलन। इसमें लेखक ने बापू के व्यक्तित्व की भूमिका से देश की वर्तमान आर्थिक, सामाजिक और नैतिक स्थिति का, विश्व-शान्ति का ज्वलन्त और मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है। आत्म-निरीक्षण के लिए अनोखी पुस्तिका। पृष्ठ ५२, मूल्य ०.५० रु०।

दादा की नजर से लोकनीति

इस पुस्तक में 'लोकनीति' विषय पर बम्बई में किये गये दादा के तीन भाषणों का संकलन श्री विमलाबहन ने किया है। राजनीति के छात्रों के लिए इसमें सर्वथा मौलिक चिन्तन मिलेगा। पृष्ठ ७४, मूल्य ०.५०।

गांधी-साहित्य

महादेवभाई की डायरी खण्ड १, २, ३	महादेव देसाई	प्रत्येक ८.००
महादेवभाई की डायरी खण्ड ४		(प्रेस में)
गांधीजी के संस्मरण	शान्तिकुमार	अजिल्द २.५०
,, ,, ,,	,,	सजिल्द ३.५०
अन्तिम झाँकी	मनुबहन गांधी	१.५०
शिक्षा में अहिंसक क्रान्ति	गांधीजी	१.००
युग-पुरुष गांधी	रामनारायण उपाध्याय	१.००
अफ्रीका में गांधी	जॉसेफ जे० डोक	१.००
गांधी जी और विश्व-शान्ति	देवोदत्त शर्मा	०.६०
प्यारे बापू (तीन भाग)	एलेनो सेमियो	प्रत्येक ०.५०
गांधी पुण्य-स्मरण	दादा धर्माधिकारी	०.५०
गांधी : एक सामाजिक क्रान्तिकारी	विल्फ्रेड वेलॉक	०.३७
बापू के जीवन में प्रेम और श्रद्धा	मनुबहन गांधी	०.३०
बापू की गृह-माधुरी	,, ,,	०.३०

संस्मरण, जीवन, चरित्र

संस्कृति के परिव्राजक	काका कालेलकर	२०.००
आजादी की मंज़िलें	अनु. सतीशकुमार	४.००
विना पैसे दुनिया का पैदल सफर	सतीशकुमार	३.५०
,, ,,	,, सजिल्द	५.००
मेरा निर्माण और विकास	नानाभाई भट्ट	२.२५
किशोरलालभाई की जीवन-साधना	नरहरिभाई परीख	२.००
गुजरात के महाराज	बबलभाई महेता	२.००
स्मरणांजलि (जमनालालजी बजाज)	: संकलन	१.५०
पत्र-व्यवहार ,, ,,	सं० रामकृष्ण बजाज	१.२५
जाजूजी : जीवन और साधना	श्रीकृष्णदत्त भट्ट	१.२५
मेरी जीवन-यात्रा : मैत्री-यात्रा	शंकरराव देव	१.००
यात्रा के पथ पर	चारुचन्द्र भण्डारी	०.५०
मेरा जीवन-विकास	अण्णा सहस्रबुद्धे	०.५०
जॉर्ज फॉक्स का सत्याग्रही जीवन	मनोहर दिवाण	०.४०
स्वामी नारायणगुरु की जीवनी	सत्यन्	०.२५

सर्व सेवा संघ प्रकाशन

राजघाट, वाराणसी

गांधी का उत्तराधिकारी

ज वा ह र ला ल

दादा धर्माधिकारी

"बुद्धि की स्वतन्त्रता का अर्थ यह है कि मैं अपनी बुद्धि में जितनी श्रद्धा और जितना विश्वास रखता हूँ, उतनी श्रद्धा और उतना विश्वास दूसरे की बुद्धि में भी रखूं। सत्य-निष्ठा के इस पहलू में जवाहरलाल दुनिया में अपना एक स्थान रखता था। वह इस दृष्टि से एक अनूठा आदमी था। वह जहाँ तक हो सके, दूसरे की बात श्रद्धा के साथ सुनने की कोशिश करता था।"

× × ×

दादा की यह छोटी-सी रचना व्यापक रूप से जवाहरलालजी के व्यक्तित्व को समझने के लिए खूब ही ठोस विचार प्रदान करती है और अपने दृष्टिकोण को उदार तथा उदात्त बनाने की प्रेरणा देती है।

मूल्य : पचास पैसे